भ्रष्टाचार की जड़ है शिक्षा जगत - आचार्य महाप्रज्ञ

लाडनूं, 24 सितम्बर।

अहिंसा यात्रा से संपूर्ण विश्व में अहिंसा का संदेश देने वाले राष्ट्रसंत आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि भ्रष्टाचार बढ़ने की सब चिंता कर रहे हैं। पर उसकी जड़ कहां है यह ध्यान देने की जरूरत है। भ्रष्टाचार की शिक्षा जगत है आज जितना भ्रष्टाचार व्याप्त है वे सभी लोग उच्च शिक्षा प्राप्त है। जब तक शिक्षा के साथ अहिंसा के संस्कार, नैतिकता के संस्कार नहीं दिये जायेंगे तब तक हम भ्रष्टाचार मिटाने की बात करें, वह कितनी सफल होगी इसमें प्रश्न चिन्ह लगा रहेगा। प्रारंभ से ही विद्यार्थियों में अहिंसा और नैतिकता के संस्कार देना आवश्यक है।

उक्त विचार उन्होंने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा आयोजित विश्वविद्यालयी विद्यार्थियों के अहिंसा प्रशिक्षण शिविर के समापन सत्र को संबोधित करते हुए व्यक्त किये।

आचार्य महाप्रज्ञ ने वर्तमान इकोनोमिक्स सिस्टम को भी भ्रष्टाचार बढ़ने में योगभूत बताते हुए कहा कि देश का वर्तमान इकोनोमिक सिस्टम भी भ्रष्टाचार की पोषण देने वाला है। उसमें केवल भौतिकता को प्रमुखता दी गई है। नैतिक मूल्यों के अभाव में यह सिस्टम भ्रष्टाचार को रोक पाने में सक्षम नहीं है। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि हम सापेक्ष अर्थशास्त्र पर कार्य कर रहे हैं। इस कार्य में विश्व के प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री जुड़े हुए हैं। जिनका नवम्बर में सेमीनार होगा। इस सेमीनार में सापेक्ष अर्थशास्त्र के नये प्रारूप को प्रस्तुत किया जायेगा।

आचार्य प्रवर ने यूनेस्को द्वारा दिल्ली में अहिंसा एवं शांति के संदेश को फैलाने वाले अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान खोलने के निर्णय की चर्चा करते हुए कहा कि एशिया के हिन्दुस्तान के लोग अहिंसा के महत्त्व को क्यों समझ नहीं रहे हैं और पश्चिमी देश इसको अपनाने पर ज्यादा ध्यान देने लग गये हैं। इसका कारण है पश्चिमी देश हिंसा की त्रासदी भोग चुके हैं। उनको इसका परिणाम पता है। इसलिए ही पश्चिमी देश अहिंसा की प्रतिष्ठा पर ध्यान दे रहे हैं। आचार्यश्री ने कहा कि हिंसा के संस्कार जब पुष्ट होते हैं तो आर्थिक, सामाजिक, पारिवारिक समस्याओं का समाधान नहीं दिया जा सकता। आज पूरे विश्व में भय का वातावरण है। शिक्षा संस्थानों में भी विद्यार्थियों के द्वारा हिंसक कृत्य किये जा रहे हैं। प्राचीन काल ऐसा नहीं होता था। पहले मर्यादाएं होती थी। आज सारी मर्यादाएं टूट चूकी है। अकारण ही हिंसक घटनाएं होने लग गई है। पढ़े लिखे लोग बड़ी-बड़ी डकैती की वारदातों में लिप्त हो रहे हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने आज मानसिक तनाव ज्यादा है। उससे भी ज्यादा खतरनाक भावनात्मक तनाव है। इस तनाव के कारण बड़ी बीमारियां बढ़ रही है। उन्होंने अहिंसा को सब जीवों का कल्याण करने वाली बताते हुए कहा कि वर्तमान में सबसे ज्यादा जरूरत अहिंसा प्रशिक्षण की है।

इस अवसर पर अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.आर. दूगड़ ने जैन विश्व भारती के आयामों की जानकारी देते हुए कहा कि इस अहिंसा प्रशिक्षण शिविर में 19 कॉलेजों से 55 विद्यार्थियों ने भाग लिया। जिनको सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में अंशु भाटी, जयप्रकाश, गोपाल शर्मा, कमल सैनी ने अपने अनुभवों की प्रस्तुति दी। संचालन वंदना कुण्डलिया ने किया।